Sanchi Stupa Architecture

Dr. Dilip Kumar
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Ancient Indian History & Archaeology,
Patna University, Patna
Paper – III, B.A. 2nd Year

भारतीय स्थापत्य कला के इतिहास में स्तूप का बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है । मानव के मरणोपरांत उसके अस्थि अवशेष पर जो टीला बनाया जाता है उसे स्तूप कहा जाता है । स्तूप शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में दो बार किया गया है । ऋग्वेद में अग्नि की उठती हुई ज्वाला को स्तूप कहा गया है।

प्रारंभ में स्तूप मिट्टी का बनाया जाता था । धीरे - धीरे मौर्यकाल तथा शुंगकाल में ईंटो तथा पत्थरों से आच्छादित स्तूपों का निर्माण किया जाने लगा । बौद्ध धर्म में स्तूप पूजा की परम्परा का प्रारम्भ तब हुआ जब भगवान बुद्ध के मरणोपरांत उनके अस्थि अवशेषों को आठ भागों में बांटकर उन पर टीलानुमा आकार बनाया गया जो स्तूप कहलाया । तब से भगवान बुद्ध के प्रतीक के रूप में स्तूप की पूजा की जाने लगी। साक्ष्यों से यह पता चलता है कि पिपरहवा का स्तूप सबसे प्रथम स्तूप माना जाता है जो उतर प्रदेश के बस्ती जिला में स्थित है, जिसका ब्यास 116 फुट तथा ऊंचाई 21 फुट है । यह अशोक के पहले का माना जाता है क्योंकि इससे प्राप्त बर्तनों पर अशोक के पहले की लिपि अंकित है । इसके बाद राजाओं ने अपने - अपने शासनकाल में विभिन्न स्तूपों का निर्माण करवाया जिसमें समय के साथ - साथ कई परिवर्तन देखने को मिलता है ।

साँची भोपाल के विदिशा से केवल 5 मील की दुरी पर स्थित है । इन स्तूपों का निर्माण तीसरी शताब्दी ई. पू. हुआ था । महावंश के अनुसार इस स्तूप के निर्माण में

लगभग 1200 वर्ष लगा था । साँची में कुल 9 स्तूप है जिसमें एक महास्तूप है तथा अन्य छोटे - छोटे स्तूप है । अशोक कालीन यह स्तूप प्रारंभ में इंटों का बना था जिस पर शुंगकाल में प्रस्तर खण्ड लगवाये गए । साँची के स्तूपों में तीन स्तूप विशेष महत्व वाले है स्तूप संख्या 1, 2 तथा 3 । स्तूप संख्या - 3 में बुद्ध के दो शिष्यों सारिपुत्र, मौद्गल्यायन के अस्थि अवशेष सुरक्षित है । स्तूप 1 तथा 3 टीले पर बनाया गया है जबकि स्तूप संख्या 2 पहाड़ी के पश्चिम की ओर बना है ।

साँची का महान मुख्य स्तूप / महास्तूप, मूलतः सम्राट अशोक महान ने तीसरी शती, ई.पू. में बनवाया था । इसके केन्द्र में एक अर्धगोलाकार ईंट निर्मित ढांचा था, जिसमें भगवान बुद्ध के कुछ अवशेष रखे थे । इसके शिखर पर स्मारक को दिये गये ऊंचे सम्मान का प्रतीक रूपी एक छत्र था। इसका निर्माण कार्य का कारोबार अशोक महान की पत्नी देवी को सौपा गया था, जो विदिशा के व्यापारी की ही बेटी थी । साँची उनका जन्मस्थान और उनके और सम्राट अशोक महान के विवाह का स्थान भी था । यह प्रेम, शांति, विश्वास और साहस के प्रतीक हैं । साँची के स्तूप दूर से देखने में भले मामूली अर्द्धगोलाकार संरचनाएं लगती हैं लेकिन इसकी भव्यता, विशिष्टता व बारीकियों का पता साँची आकर देखने पर ही लगता है । इसीलिए देश-दुनिया से बडी संख्या में बौद्ध मतावलंबी, पर्यटक, शोधार्थी, अध्येता इस बेमिसाल संरचना को देखने चले आते हैं । साँची के स्तूपों का निर्माण कई कालखंडों में हुआ जिसे ईसा पूर्व तीसरी सदी से बारहवीं सदी के मध्य में माना गया है । ईसा पूर्व 483 में जब गौतम बुद्ध ने देह त्याग किया तो उनके शरीर के अवशेषों पर अधिकार के लिए उनके अनुयायी राजा आपस में लडने-झगडने लगे । अंत में एक बौद्ध संत ने समझा-बुझाकर उनके शरीर के अवशेषों के हिस्सों को उनमें वितरित कर समाधान किया । इन्हें लेकर आरंभ में आठ स्तूपों का निर्माण हुआ

और इस प्रकार गौतम बुद्ध के निर्वाण के बाद बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार इन स्तूपों को प्रतीक मानकर होने लगा ।

साँची के इस महास्तूप को शुंगकाल में प्रस्तर खण्डों से आच्छादित किया गया जिससे इसका ब्यास बढ़कर 126 फुट तथा ऊंचाई 54 फुट हो गई । भारतवर्ष में बिना चुने के किये गये चुनाई का पहला उदहारण यहीं मिलता है । शुंगकाल में इस स्तूप के उपर शिलाकंचुक (महास्तूप को पाषाण युक्त आवरण से आच्छादित करना) के उपर 4 इंच मोटी कंक्रीट जैसी परत चढ़ाई गई है तथा उस पर रंग बिरंगी चित्रकारी की गई है । साँची का यह महास्तूप त्रिमेधि स्तूप था अर्थात् भूमितल की मेधि मध्यमेधि तथा हर्मिका की मेधि । मध्यमेधि भूमि से 16 फीट ऊँची है, जिस पर प्रदक्षिणा पथ था । इसके उपर चढ़ने के लिए दक्षिण की ओर से सोपान बनाया गया था । प्रत्येक सोपान में 25 सीढियाँ है, जिसमे प्रत्येक सीढी की चौड़ाई 27 इंच तथा ऊंचाई 7 इंच है । भूमितल पर स्तूप के चारो ओर पत्थर का फर्श बनाया गया है जो स्तूप की पहली मेधि कहलाती है । इस पर महावेदिका बनी है । भरहुत के स्तूप की तरह इन वेदिकाओं पर किसी तरह का अलंकरण नहीं है । वेदिका 11 फुट ऊँची है जिसका प्रत्येक स्तम्भ भूमि से 8 फुट ऊँचा है तथा प्रत्येक स्तम्भ के बीच 2 फुट की दुरी है । इनके बीच दो सूची बनी है जो 2 फुट की है स्तम्भों के शीर्ष पर गोल मंडलाकार उष्णीष है ।

इस महास्तूप की सबसे बड़ी विशेषता इसके प्रवेश द्वार पर चार तोरण द्वार है जो सम्पूर्ण रूप से अलंकृत पाया गया है । सभी तोरण द्वार समान है तथा 34 फुट ऊँचे है । इसमें दो भारी स्तम्भ है । इनके उपर शीर्षक बने है, जिसपर 3 आड़ी धारों वाला पंजा है । इन धरणों के दोनों ओर गोल आवर्तों का अलंकरण पाया गया है जिसमें 7 आवर्त है ।

इन तोरण द्वारों में सबसे महत्वपूर्ण दक्षिणी द्वार था जिसका पुनरुद्धार 1882 ई. में किया गया । उतरी तोरण द्वार जो काफी सुरक्षित अवस्था में है, ये भी काफी अलंकृत है । मूर्तियाँ बीच में धर्मचक्र, दोनों ओर अनुचर, यक्ष, त्रिरत्न तथा सिंह अंकित है । बोधिवृक्ष के प्रतीक द्वारा सात मानुषी बुद्धों का अंकन पाया गया है । सबसे निचला धरण साँची कला का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है । जिस पर बेसंतर जातक का दृश्य अंकित है । इसमें सम्पूर्ण कथा का चित्रण पाया गया है जो साँची कला का सबे उतम उदाहरण माना जाता है । पूर्वी तथा पश्चिमी तोरण द्वार भी अन्य की भांति काफी अलंकृत पाया गया है ।

स्तूप की हर्मिका जो बाद में बनवाई गई थी, बहुत खुबसूरत है। हर्मिका की वेदिका चौकोर थी जिसकी प्रत्येक भुजा 24 फुट 6 इंच तथा कोण रेखा 30 फुट 1 इंच थी । वेदिका का स्तम्भ 9 फुट 11 इंच का था जिसका 2 फुट 6 इंच स्तूप के नीचे दबा हुआ था । स्तूप का सपाट उपरी भाग का ब्यास 38 फुट था जिसपर वेदिका बनी थी । इस हर्मिका के उपर छत था जिस पर काफी बारीक़ अलंकरण पाया गया था । मार्शल के अनुसार किसी भी देश के शिल्पी ने इतना काम नहीं किया होगा ।

इस महा स्तूप के आलावा स्तूप संख्या 2 तथा 3 भी काफी महत्वपूर्ण थे । पहाड़ी के पश्चिमी ढलान पर लगभग 350 गज की दुरी पर स्तूप संख्या - 2 स्थित था । स्तूप के अंड का ब्यास 47 फुट है ऊंचाई 28 फुट तथा छत्र से लेकर इसकी ऊंचाई 37 फुट हो गयी थी । भूमिस्थ वेदिका में 88 स्तम्भ थे स्तूप में 3 वेदिकाएं थी । भूमि तल पर, मध्य वेदिका, तथा हर्मिका के पास । मध्यवेदिका पर जाने के लिए सोपान लगा था । कमल की लहराती लताएँ, देवी श्रीलक्ष्मी, पूर्णहार पर देवी आसन वेदिका पर पाया गया है । चक्र, किन्नर, मिथुन, नाग, यक्ष, शालभंजिका, देवी, देवता, धर्मचक्र, स्तूप, पूजा दृश्य, पशु, पक्षियों स्तम्भ पर पाए गये है ।

महास्तूप के उतर पूर्व में 50 गज की दुरी पर स्तूप संख्या 3 है जिसमे बुद्ध के शिष्य सारिपुत्र, मौद्गाल्यायन की अस्थि है । इसकी ऊंचाई 20 फुट है, छत्र से लेकर यह 35 फुट 4 इंच का है तथा इसका ब्यास 49 फुट 6 इंच है । इसमें केवल एक तोरण द्वार है । भूमिस्थ वेदिका अलंकृत है ।

साँची एक प्रसिद्ध स्थान, जहां अशोक द्वारा निर्मित एक महान स्तूप, जिनके भव्य तोरणद्वार तथा उन पर की गई जगत प्रसिद्ध मूर्तिकारी भारत की प्राचीन वास्तुकला तथा मूर्तिकला के सर्वोत्तम उदाहरणों में हैं । बौद्ध की प्रसिद्ध ऐश्वर्यशालिनी नगरी विदिशा के निकट स्थित है । ऐसा लगता हैं कि बौद्धकाल में साँची, महानगरी विदिशा की उपनगरी तथा विहार - स्थली थी । सर जान मार्शल के मत में कालिदास ने नीचगिरि नाम से जिस स्थान का वर्णन मेघदूत में विदिशा के निकट किया है, वह साँची की पहाड़ी ही है । भारत में साँची का स्तूप ही बेहद प्राचीन माना जाता है । बौद्ध धर्म के लोगो के लिये यह एक पावन तीर्थ के ही समान है । साँची के स्तूप शांति, पवित्रतम, धर्म और साहस के प्रतिक माने जाते है । यह स्तूप एक ऊंची पहाड़ी पर निर्मित है । इसके चारों ओर सुंदर परिक्रमापथ है । बालु-प्रस्तर के बने चार तोरण स्तूप के चतुर्दिक् स्थित हैं जिन के लंबे-लंबे पट्टकों पर बुद्ध के जीवन से संबंधित, विशेषत: जातकों में वर्णित कथाओं का मूर्तिकारी के रूप में अद्भुत अंकन किया गया है। इस मूर्तिकारी में प्राचीन भारतीय जीवन के सभी रूपों का दिग्दर्शन किया गया है । मनुष्यों के अतिरिक्त पशु-पक्षी तथा पेड़-पौधों के जीवंत चित्र इस कला की मुख्य विशेषता हैं । सरलता, सामान्य, और सौंदर्य की उद्भभावना ही साँची की मूर्तिकला की प्रेरणात्मक शक्ति है ।